दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट-8
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2308**

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 08 / 10 Aug 2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	9	5	8	1	7

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

A3

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण नई कहानी संकलन के मछलियाँ कहानी से उद्धृत है जिसकी रचियना उषा प्रियम्वदा है।

प्रसंग- नटराजन द्वारा विजया-लक्ष्मी को समझाते समय कही गयी पंक्तियाँ है।

व्याख्या - नटराजन, मनीष द्वारा विजी को धोखा देने पर, विजी से कहता है कि तुम अकेली

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कहा तक लाोगी। यदि किसी चीज से सचमुच प्यार हो तो उसके टूटने पर भी उससे मोह नहीं त्यागता है।

विशेष

1) नई कहानी की विशेषताएँ जैसे- मानसिक द्वंद्व निरर्थकता बोध

2) प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग

3) सीधी-सरल भाषा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान निबंधकार ~~के~~ गुलाबराय के ~~हमारी~~ भारतीय संस्कृति से लिया गया है।

प्रसंग- इसमें हिन्दू जाति के विखण्डन की प्रक्रिया की गतिशीलता को दर्शाया गया है।

व्याख्या- निबंधकार कहते है भारतीय संस्कृति का विकास एक लम्बी प्रक्रिया से हुआ है। जिसमें वैदिक संस्कृति का अवमूल्यन हुआ है साथ ही नये-नये धर्मों के आक्रमण द्वारा देश

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का विभाजन हुआ है।

विशेष -

1) भारतीय संस्कृति के विविधता के कारण दर्शाए गये है।

2) धार्मिक विविधता का दर्शन

3) साम्प्रदायिकता द्वारा देश का खण्डन हानिकारक है।

4) सरल-सहज भाषा

5) मुहावरों एवं लोकोक्ति का प्रयोग
"एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्ता वैसे जानी।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश प्रगतिवादी लेखक यशपाल के दिव्या उपन्यास से उद्धृत है।

प्रसंग - प्रेस्थ द्वारा अपने पुत्र पृथुसेन को नारी को भोग की वस्तु मानने और सामने उपस्थित अवसर को महत्व देने बात कही गयी है।

भावार्थ - प्रेस्थ अपनी नारी के प्रति त्याज्य की भावना के साथ कहता है कि तुम मेरे जीवन भर के जन्मदोष से टकरा कर कमाये गये यश को नष्ट कर देना चाहते हो। चाणक्य ने भी कहा है कि जो अपनी रक्षा करते हैं उन्हें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

स्वर्ग की प्राप्ति होती है। अतः नारी के मोह में तुम अपनी बुद्धि मत खोओ। स्त्री भोग्य की वस्तु है। जो पतन की ओर ले जाती है।

विशेष -

(1) मध्यकालीन सामंतवादी सोच के माध्यम नारी को भोगमूलक माना गया है।

(2) कबीर ने भी अपने दोहों में नारी को माया का रूप माना है -

'माया गई न मन मुआ, घर घर गया शरीर'

(3) तत्सम शब्दों का प्रयोग

- महापण्डित, महत्वाकांक्षी

प्रासंगिकता - कुछ पुरुषसत्तावादी समाज में आज भी यही सोच है जो बलात्कार, यौन हिंसा को प्रेरित करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर.... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी निबंधकार हजारीप्रसाद द्विवेदी के कुटज निबंध से उद्धृत है।

प्रसंग - इसमें कुटज के माध्यम से बाधाओं से टकराकर अपने व्यक्तित्व की रक्षा का प्रसंग है।

व्याख्या - द्विवेदी जी कहते हैं कुटज में स्वयं की रक्षा का अदम्य साहस है जो कई मान्यताओं के बावजूद खड़ा है, जिस पर कई प्रहार हुए हैं, परन्तु फिर वह उन्हें झेलने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

हुए अपनी रक्षा कर रहा है।

विशेष-

→ ललित निबंध होने के साथ विचारपरक शैली का प्रयोग

→ सरल-सीधी भाषा

→ विचारात्मक शैली

→ विरामचिन्हों का उपयुक्त स्थान पर प्रयोग

→ प्रश्नवाचक शैली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण, अस्तित्ववादी साहित्यकार मोहन राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक से उद्धृत है।

प्रसंग- आषाढ़ के पहले दिन जब मल्लिका और कालिदास बारिश में भीगते हैं उस समय मल्लिका के मन के भाव का चित्रित किया गया है।

व्याख्या- मल्लिका कहती है कि वातावरण के प्रत्येक कण में सम का भाव है। पत्ती के हिलने की आवाज भी संगीत का निर्माण करती है। मनुष्य ने अपने व्यक्तित्व को विखण्डित कर दिया है इसलिये वह बस परिवेश

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

से तादात्म्य नहीं बना पाता है। इनके अभिमान से निकला स्वर बेसुरा होता है। इस प्रकृति की आवाज में जो मिठास है वह कहीं और नहीं।

विशेष -

(1) छायावादी दर्शन से प्रभावित प्रकृति प्रेम का वर्णन

तुलना - कामायनी की श्रद्धा भी प्रकृति के सभी जीव-जंतु से प्रेम करती है।

(2) मनुष्य के विखण्डित व्यक्तित्व का वर्णन

(3) पुनरावृत्ति शैली - चहचह
कल-कल

(4) तत्समी भाषा - पाण्डित्य, परमाणु

प्रासंगिकता - वर्तमान दौर में भी व्यक्ति प्रकृति की ओर लौटना चाहता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'गोदान' हिन्दी साहित्य के महान साहित्यकार प्रेमचंद द्वारा 1936 में रचा गया अंतिम उपन्यास है।

प्रेमचंद द्वारा 1936 में प्रगतिवादी लेखक संघ (प्रलेस) के अध्यक्ष का पद संभाला गया था। जिससे उनकी प्रगतिवादी विचारधारा का प्रभाव गोदान में भी दिखाई देता है।

गोदान में प्रेमचंद की प्रगतिवादी दर्शन को गोबर के माध्यम से चित्रित किया गया है जो शोषण के विरुद्ध आवाज उठाकर, समाज से उठकर व्यक्ति के महत्व को स्थापित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को स्थापित करने का प्रयास करना है।

गोदान: होरी और गोबर की तुलना

(1) होरी द्वारा अत्यधिक कर चुकाने ऋण पुरा करने के बावजूद भी चक्रव्यूह से न निकल पाने, का गोबर विरोध करता है।

गोबर: यह सब इन अमीरो की चालबाजी, हमसे ऋण के ब्याज से ही तो इनका व्यापार चलता है।

(2) गोबर, खेती-किसानी के काम के प्रति उदासीन है उसे इसमें कोई लाभ दिखाई नहीं देता है वहीं होरी इसे सम्मान और मर्यादा मानता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होरी: खेती में तो किसान की मर्यादा है। किसी और के यहाँ मजदूरी करने में वो सम्मान कहाँ जो अपने खेत के काम में।

(3) होरी संयुक्त परिवार के ढांचे पर विश्वास करता है जबकि गोबर का विश्वास इन पारिवारिक मूल्यों पर नहीं है। इसलिये वह अपनी पत्नी झुनिया के साथ शहर चले जाता है।

→ होरी द्वारा हीरा को माफ करना

(4) होरी, सामंतवादी व्यवस्था को शोषणकारी नहीं मानता जबकि गोबर लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना का हितैषी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संभावनाशील चरित्र

होरी और गोबर में
गोबर में अपनी परिस्थितियों को परिवर्तित करने का साहस दिखाई देता है - जैसे -

1) प्रेम विवाह करने का साहस
2) शहर में जाकर व्यवसाय करना
3) नखा के अतिरिक्त ब्याज वसूली पर रिपोर्ट लिखाने की धमकी देना।
4) कानून व्यवस्था पर विश्वास

परन्तु अंत में वह स्वयं परिस्थितियों का गुलाम बन जाता है, शहरी जीवन का संघर्ष उसे नशा करने, घरेलू हिंसा, मारपीट की ओर प्रवृत्त कर देती है।

अतः गोबर को भी पूर्णतः संभावनाशील नहीं कहा जा सकता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली की विशिष्टताओं का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'श्रद्धा भक्ति' निबंध रामचंद्र शुक्ल का 'मनोविकारपरक' निबंध है। इसमें मुख्यतः विचारात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

यह हजारीप्रसाद द्विवेदी की भावनात्मक से प्रेरित ललित निबंध शैली को नहीं अपनाता अपितु वैज्ञानिकता, तार्किकता से युक्त विचारात्मक शैली द्वारा श्रद्धा-भक्ति के बीच विद्यमान सूक्ष्म अंतर को उजागर करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रामचन्द्र शुक्ल की निबंध शैली की विशेषताएँ

(1) स्पष्ट शब्दों का चयन - शुक्ल जी द्वारा शब्दों का चयन बड़ी सूझ-बूझ से किया जाता है।

(2) सूत्र भाषा शैली - शुक्ल जी द्वारा कम शब्दों में बड़े अर्थ निकालने की क्षमता 'गागर में सागर' को चरितार्थ करती है।

(3) चेतना प्रवाह शैली - निबंध को पढ़ने में एक लयबद्धता पाठक को बांधे रखती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' में यशपाल का वैचारिक हस्तक्षेप उपन्यास के रचना-कौशल का अतिक्रमण करता है- इस मत का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यशपाल मुख्यत:

मार्क्सवाद से प्रभावित प्रगतिवादी विचारधारा के लेखक थे। उनके द्वारा लिखे गये कई रचनाओं जैसे- पार्टी कॉमरेड, दादा कामरेड, देशद्रोही आदि में मार्क्सवादी दर्शन के प्रभाव दिखाई देते हैं।

दिव्या उपन्यास मुख्यत:

नारीगत समस्याओं को उकेरने के लक्ष्य से लिखा गया था। परन्तु आलोचकों का आक्षेप है कि इस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पर यशपाल का मार्क्सवादी प्रभाव दिखाई देता है।

जैसे-

1) पृथुसेन द्वारा जातिगत भेदभाव, के विरुद्ध आवाज उठाना और परिस्थिति परिवर्तित करने का प्रयास

2) मारिश द्वारा चार्वाक दर्शन और मार्क्सवाद से प्रभावित होकर समाज में व्याप्त कुरितियों और अंधविश्वासों से पर्दा उठाना

उदा०- नारी समस्या के समाधान हेतु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3) दिव्या के माध्यम से अपनी स्थितियों को परिवर्तित करने का प्रयास और अंत में सम्मान का स्थान प्राप्त करना।

4) ~~स्व~~ प्रांत के महान पुरुष द्वारा दासी धारा की मृत्यु पर अपराधबोध और मृत्यु को प्राप्त होना।

उपरोक्त घटनाएँ यशपाल के मार्क्सवादी विचार से प्रभावित हैं परन्तु सम्पूर्ण रचना में यशपाल ने अपनी विचारधारा को थोपने से स्वयं को रोका है। ~~और~~ इसमें वे सफल भी हुए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) अज्ञेय के निबंध 'संवत्सर' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण नई कहानी के संकलन एक दुनिया समानांतर की विजेता कहानी का है जिसके लेखक रघुवीर सहाय है।

प्रसंग- कहानी की नायिका द्वारा अपने गर्भ के बच्चे को पति द्वारा दो बार मारने की कोशिश का वर्णन है।

भावार्थ- नायिका कहती है जिस अनचाहे गर्भ को तुम नष्ट कर देना चाहते हो वह नष्ट नहीं हुआ है वह अभी भी है। तुमने उस पर दो बार आक्रमण किये परन्तु वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जीने की इच्छा लिये है उसने उन आक्रमणों को निष्प्रभावित कर दिया।

विशेष -

1) बदलते दौर में किस तरह बच्चों के जन्म को इच्छानुसार निर्णित किया जाता है जबकि पहले प्राकृतिक देन माना जाता था।

2) नए विचारों का चित्रण

3) विरोधाभाषी भाषा शैली

4) सरल-सहज भाषा का प्रयोग

प्रासंगिकता - वर्तमान में बढ़ते आर्थिक बोझ ने लोगों को कम बच्चे रखने हेतु मजबूर किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रहती है; शायद वे ज़िन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश कहानी विधा में एक दुनिया समानांतर की परिंदे कहानी से ली गई है। जिसके लेखक निर्मल वर्मा है।

प्रसंग - मृत्यु के प्रतिप्रा करते लोगों की मन की बातों को व्यक्त किया गया है।

व्याख्या - डॉ. मुकर्जी कहते है कि मेरी मृत्यु पर पीछे रोना वाला कोई नहीं है यह बात एक बेफिक्री उत्पन्न कर देती है। परन्तु जिन लोगों को बहुत उम्मीद होती है, जिन्हे लगता है कि कोई तो होगा जिन्हे हमारे जाने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

से दुःख होगा उनकी मौत भी विशेष तरह की होती है जिसमें अंत तक मरने का अहसास नहीं होता है।

विशेष -

(1) नई कहानी आंदोलन की विशेषताएँ जैसे - अजनबीपन, आत्मनिर्वासन, निरर्थकताबोध का भाव।

(3) स्वालाप शैली का प्रयोग

(4) मन की गहराईयों को सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है।

(5) सरल-सहज भाषा।

प्रासंगिकता - वर्तमान दौर के भौतिकवादी संबंधों की ओर ईशारा किया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यावतरण छायावादी नाटककार जयशंकर प्रसाद के स्कंदगुप्त नाटक से उद्धृत है।

प्रसंग - यह दृश्य नाटक के अंत का है जब देवसेना शारीरिक प्रेम से ऊपर उठकर आध्यात्मिक प्रेम के महत्व को स्थापित करती है।

व्याख्या - देवसेना, स्कन्दगुप्त को समझाते हुए कहती है कि हे! आर्य! हृदय को कष्ट तो होगा ही। आप तो राजा हैं इन पल भर की सुख के पीछे न भागे अतः ऐसे सुख की कामना ही व्यर्थ है। अतः देश की सुरक्षा हेतु हेतु आपको

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वहित के स्थान पर राष्ट्रहित को आगे रखना होगा।

विशेष-

(1) जयशंकर प्रसाद ने छायावादी प्रेम का त्याग, अलौकिक प्रेम की स्थापना की है।

(2) राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित

(3) तुलना - गोदान में मिस मालती द्वारा मि॰ मेहता का अंतिम पड़ाव में संबोधन

(4) तत्सम भाषा

प्रासंगिकता - वर्तमान में भी दुनियाँ के संघर्ष से दूर व्यक्ति शांति की तलाश करना चाहता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी के महान अस्तित्ववादी लेखक मोहन राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक से उद्धृत है। जिसमें सृजनशीलता और सत्ता के बीच द्वंद्व को दर्शाया गया है।

प्रसंग- यह दृश्य अंतिम चरण का है जब कालिदास पुनः मल्लिका से मिलने आता है।

भावार्थ- कालिदास, मल्लिका से कहता है कि तुम्हें मुझे न पहचानना ही उचित है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम जानती थी, प्रेम करती थी, मैं सत्ता के मोह बदल चुका हूँ और मैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्वयं को ही पहचानने में असमर्थ हूँ।

विशेष

1) प्रस्तुत गद्यांश में, मोहन राकेश के अस्तित्ववादी दर्शन की छाप दिखाई देती है। जो सार्त्र के दर्शन से प्रेरित है।

2) लघुमानववाद की ~~स्थापना~~

3) विरोधाभास युक्त भाषा

4) तुलना - नई कहानियों से
→ पहचान की मांग

प्रासंगिकता - वर्तमान का मनुष्य भी इसी अंतर्द्वंद्व से ग्रसित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' हिन्दी साहित्य के महान आंचलिक उपन्यासकार फणिश्वरनाथ रेणु का महान आंचलिक उपन्यास है।

आंचलिक उपन्यास की प्रमुख विशेषताएँ होती हैं -

(1) अपने ग्रामीण परिवेश की भौगोलिक विशेषताओं का यथार्थवादी वर्णन

(2) गाँव को ही नायक मानना

(3) गाँव की सम्पूर्ण सांस्कृतिक, राजनीतिक सामाजिक - आर्थिक समस्याओं का स्पष्ट रूप से उभारना।

इसी कारण आंचलिक उपन्यास क्षेत्र विशेष होते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उदाहरण - 'तो यह मेरीगंज .... नेपाल की तराई से गंगा के तट तक पूर्व की दिशा में फैला विशाल मैदान पार करने के बाद, यहाँ तक पहुँच सकते हैं।

परन्तु प्रश्न उठता है कि क्या यह अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण कर राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को धारण करता है?

उपन्यास के कथ्य में ही रेणुजी द्वारा यह घोषणा की गई थी -

"यह अंचल देश के एक छोटे से जिले, का एक छोटा सा क्षेत्र है परन्तु यह सम्पूर्ण देश के पिछड़े गाँवों का प्रतिनिधित्व करता है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अतः स्पष्ट होता है कि आंचलिक उपन्यास होने के कारण किसी गाँव विशेष के ग्रामीण परिवेश को यथार्थता के साथ उकेरा गया है। परन्तु इसमें व्याप्त समस्याएँ देश के प्रत्येक पिछड़े गांव की समस्याएँ हैं।

जैसे -

(1) पिछड़े गाँवों में आज भी वर्णव्यवस्था जातिगत भेदभाव, अंधविश्वास जैसी समस्याएँ हैं।

"लगता है मैं संन्यरमन बाबू यादव होंगे, क्योंकि ऐसा अजीब नाम यादवों का ही हो सकता है।"

(2) आर्थिक समस्याएँ जैसे - गरीबी, भूख, शोषण आदि प्रत्येक पिछड़े क्षेत्र की समस्या है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

डॉ॰ प्रशांत को रोग की वजह पता चल गई थी - गरीबी, भूख, जहालत।

(1) नारी अधिकारों की कमी, शिक्षा का निम्न स्तर। जोरक जमीन जोर का, नहीं तो किसी और का।

(2) राजनीतिक भ्रष्टाचार, दलगत नीति, वोट बैंकिंग। कांग्रेस और समाजवादी पार्टियों की नीतियाँ

उपरोक्त वर्णन से ज्ञान होता है कि मेरीगंज की समस्याएँ उठाकर, लेखक ने सम्पूर्ण राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का चित्रण किया है। जो इसे सार्वकालिक बनाता है।

6 यहाँ शूल भी है, धूल भी है, फूल भी है काँटे भी है, सुन्दरता भी कुरूपता भी किसी से दामन नहीं छुड़ाया जा सकता था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

'अलग्योझा' कहानी हिन्दी साहित्य के महान कहानीकार प्रेमचंद की आदर्शवाद से प्रभावित महान कहानी है। जिसमें संयुक्त परिवार का महत्व, सामाजिक सुरक्षा, स्त्री-पुरुष संबंध की पवित्रता आदि को दर्शाया गया है।

अलग्योझा कहानी का कथ्य

अलग्योझा कहानी में एक से अधिक लोगों की कहानियाँ है। अतः यह एक मिश्रित कहानी है। इसलिये इसमें पारिवारिक जीवन की लगभग सभी सभी समस्याओं को उठाया गया है और साथ ही आदर्शवाद के प्रभाव से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हृदय परिवर्तन द्वारा समाधान भी प्रस्तुत किया गया है।

समस्याएँ

(1) भोला महतो द्वारा पहली पत्नी के गुजरने के बाद पन्ना से दूसरे विवाह के बाद परिवार में टूटन की समस्या। साथ ही नारी के रूप सौन्दर्य में अभिमान को दर्शाया गया है।

"पन्ना को अपने सौन्दर्य में बहुत घमण्ड था और रूप और घमण्ड में चोली दामन का संबंध होता है।"

(2) विमाता के आने से पहली पत्नी के बच्चे में कैसा प्रभाव पड़ता है और किस प्रकार उम्र से पहले वह बड़ा हो जाता है।

तुलना - ईदगाह का हामिद और रघु का दाम का मंगल भी उम्र के पहले ही बड़े हो गये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(3) संयुक्त परिवार के टूटने से किस प्रकार सामाजिक सुरक्षा खतरे में पड़ती है।

"भोला महतो के जाने के बाद रघु ने ही पन्ना के तीनों बच्चों की बाप की तरह देखभाल की थी।"

(4) रघु की मुलिया के साथ विवाह के बाद पुनः वही समस्या का दोहराव। साथ ही रघु जैसे किसान का कम उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारियाँ उठाते हुए मर जाना।

"अभी छत्तीस का ही तो हुआ था रघु परन्तु ऐसा लगता मानो जान ही नहीं बची हो शरीर में।"

इस प्रकार, कथ्य के आधार पर अलग्योझा वैविध्यपूर्ण कहानी है जहाँ चरित्र वर्गगत है जैसे- विधवा वर्ग, किसान वर्ग, नारी वर्ग। आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'महाभोज' उपन्यास में निहित नाटकीयता के उन बिंदुओं को रेखांकित कीजिये जिनके कारण उसका नाट्य-रूपांतरण रंगमंच पर सफल सिद्ध हुआ है। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'महाभोज' हिन्दी साहित्य की नारी लेखन की महान लेखिका मन्नू भण्डारी, राजनीतिक विषय में लिखा गया महान और सफल उपन्यास ~~नाटक~~ है।

इस उपन्यास में मन्नू भण्डारी द्वारा राजनीति की अवसरवादिता, वोट बैंकिंग की राजनीति, ग्रामीण परिवेश में उपस्थित जातिगत भेदभाव, प्रेस, मीडिया आदि का भ्रष्टाचार में लिप्त होना आदि पर लेखन किया गया है।

महाभोज उपन्यास का कथ्य ऐसा है कि इसमें नाटकीयता के सभी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

तत्व मौजूद है जिसने इसके मंचन को सफल बनाया है।

महाभोज उपन्यास की नाटकीयता

(1) नाटक की तरह दृश्य विधान होना। उपन्यास के प्रारम्भ में ही दा साहब के कमरे का वर्णन।

" देश के सबसे बड़े शहर के महान व्यक्ति दा साहब अपने कमरे में बैठे ... मौन, गंभीर।"

(2) पात्रों के चरित्र का वर्णन उनकी शारीरिक और व्यवहारिक विशेषताओं से।

" दा साहब के माथे की लकीरें, शरीर की कसावट, आत्मविश्वास, तर्कशक्ति विशेष है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) नाटकीय सस्पेंस, नाटक का प्रमुख घटक होता है। महाभोज में वास्तव में कौन सही और कौन गलत है समझना मुश्किल है।

(5) पात्रों में मानसिक तनाव और द्वन्द्व होना नाटकीय चरित्रों की विशेषता है। उदाहरण- आषाढ़ का एक दिन में कालिदास के द्वंद्व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भारत दुर्दशा' नामक नाटक नवजागरण काल के महान नाटककार भारतेंदु हरिश्चन्द्र की कृति है।

इसमें मुख्यत: प्राचीन के गौरव की प्रशंसा, वर्तमान की स्थिति पर दुःख और सुखद भविष्य की कामना की गई है।

इसकी तुलना मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती कविता से की जा सकती है।

इसमें परिवेशगत राष्ट्रभक्ति-राजभक्ति का द्वंद्व, ब्रजभाषा और खड़ी बोली का द्वंद्व आदि ~~की~~ स्थिति से प्रभावित दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत-दुर्दशा : त्रासदी

त्रासदी मुख्यत: पाश्चात्य साहित्य की विशेषता है। जिसके शर्ते निम्न होती है-

(1) नायक का भद्र पुरुष होना
(2) नायक का साहसी, उदात्त, वीररस से परिपूर्ण होना
(3) जीवन मे भावावेश मे कोई गंभीर गलती कर देना (हैमार्शिया)
(4) गलती के कारण अंत मे हार का सामना करना (विरेचनमूलक स्थिति)
(5) अंत मे सुख की अनुभूति नहीं अपितु दुःख, शोक के साथ गौरव की भावना होना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ भारत दुर्दशा के सभी पात्र, प्रतीकमूलक है, जिसमे भारत भाग्य, भारत दुर्दैव, आदि कोई भी भद्र नायक की मांग को पूरा नहीं करता है।

भारत भाग्य से उम्मीद भी की जाये परन्तु अंत मे वह स्वयं जमीन पर लेटा हुआ, हार मान चुका है।

→ वहीं दूसरी ओर, इस नाटक मे सभी पात्र आलस्य, अंधकार, अशिक्षा, मदिरा आदि विशेषता धारण किये हुए है किसी मे साहस, वीरता का भाव नहीं है।

→ जीवन मे गंभीर भूल जैसी भी कोई स्थिति नहीं है क्योंकि इसमें पात्र अपने स्थिति को ~~परिवर्ति~~ परिवर्तित करने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

हेतु सक्रिय नहीं है।

"दुनिया में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा,
मर जाना पै उठकर जाना नहीं अच्छा।"

→ नाटक के अंत में भारत भाग्य का जमीन में घुटने टेक देना और हार मान जाना। दुःखद अनुभूति कराना है परन्तु इसमें कोई शिव की भावना नहीं है।

अतः भारत दुर्दशा को त्रासदी कहना उचित नहीं है। साथ ही, भारतेंदु ने इसे त्रासदी के उद्देश्य से प्रेरित होकर लिखा नहीं है।

परन्तु दुःखद अंत, जिसमें भारत की दुर्दशा को सुधारने हेतु कोई बिंदु का नजर न आना पाठक को दुखी करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'रेणु का कथा शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक स्थान से जुड़ा है, पर उपन्यास की दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समाया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

आंचलिक उपन्यास की विशेषता ही है कि उसमें किसी अंचल विशेष की सभी सांस्कृतिक, भौगोलिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याओं को यथार्थता से दर्शाया जाये।

अर्थात् ये क्षेत्र विशेष होते है जिसमें भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताएं महत्वपूर्ण होती है।

'मैला आँचल' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित महान आंचलिक उपन्यास है। परन्तु क्षेत्रीय विशेषताओं के साथ यह सम्पूर्ण देश की पिछड़े गांवों का नेतृत्व करता है।

"यह है मेरीगंज.... देश के छोटे से जिले का छोटा सा गाँव जो सभी पिछड़े गांवों का नेतृत्व करता है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टॉवर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिस प्रकार प्रेमचंद का उपन्यास <u>गोदान</u> देश की समस्त समस्याओं को समेटा हुआ है जिसमें जातिगत भेदभाव, किसानों का शोषण, राजनीति व्यवस्था का भ्रष्ट होना, अंधविश्वास, नारी को कम अधिकार आदि सभी <u>मैला आँचल</u> में भी विद्यमान है।

"यहाँ शूल भी है, फूल भी है, कीचड़ भी है, कमल भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी किसी से भी दामन चुराकर मैं भाग न सका।"

अतः हम कह सकते हैं कि मैला आँचल, गोदान के बाद की कथा कहता है। जिस प्रकार प्रेमचंद ने गोदान के माध्यम से ग्रामीण परिवेश को उकेरा है उसी काम को रेणु ने और परिपक्वता से प्रदर्शित किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

<u>उदाहरण</u> -

(1) गोदान में ऋण ग्रस्तता की समस्या, इसमें भी <u>खम्हार</u> के माध्यम से प्रदर्शित है।

(2) गोदान में सीलिया के साथ जातिगत भेदभाव, वहीं मैला आँचल में भी।

(3) राजनीतिक और प्रशासनिक समस्याएँ गोदान में है, वहीं मैला आँचल में भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation